गवर्नमेन्ट स्पाइन इंस्टीट्यूट, अहमदाबाद द्वारा आयोजित पेराप्लेजिक मरीजों को व्यावसायिक एवं अन्य उपयोगी साधनों के वितरण समारोह में गुजरात के राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहली जी का संबोधन।(२३ अक्टुबर, २०१८)

- आज के कार्यक्रम में सर्व प्रथम मैं उन दानदाताओं के प्रति आभार व्यक्त करना चाहूँगा और उन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहूँगा जिन्होंने एक उमदा मानवीय कार्य के लिये दान दिया है । दान देने से जिसको दान दिया जाता है उसका तो कल्याण होता ही है मगर जो दान देता है उसका भी कल्याण होता है । वास्तव में दान देनेवाला तो एक माध्यम है । उसके मन में यह अहंकार नहीं जागता किमैं देनेवाला हूँ क्योंकि देनेवाला तो कोई और है।
- रहीम नाम के एक कवि थे । उन्होंने एक दोहे में कहा था कि दान देते समय मेरा मस्तकझुक जाता है और मेरी आंखे झुक जाती है । ऐसा इसीलिए होता है कि लोगों को यह लगता है किमैं दे रहा हूँ मगर वास्तव मे मैं देता नहीं हूँ,देनेवाला तो कोई और है जो रात दिन भेजता ही रहता है। लोग मुझ पर भ्रम कर रहे है कि मैं दे रहा हूँ इसीलिए मेरीआंखे शर्म से झुक जाती है

। ऐसी भावना से दिया गया दान सच्चा दान है जो समाज का भी कल्याण करता है और दान देनेवाला का भी कल्याण करता है।

- गवर्नमेन्ट स्पाइन इंस्टीट्यूट ने पेराप्लेझिक मरीज़ों को व्यावसायिक और अन्य उपयोगी साधन-सामग्री केवितरण का यह कार्यक्रम आज आयोजित किया है। ऐसे कार्यक्रमोंमें मैं पहले भी आया हूँ।
- रोगी के लिये दो बातों की आवश्यकता होती है एक तो उसके रोग का या बीमारी का सही उपचार हो और दूसरा उसे डॉक्टर की तरफ से संवेदना या आत्मीयता मिले। कभी-कभी ऐसा होता है कि डॉक्टर professionally efficient और competent होता है मगर उसके साथ-साथ उसका emotionally efficient होना भी जरूरी है। यदि professional efficiencyके साथ-साथ डॉक्टर emotionally efficient भी होता है तो उसका मरीज़ ठीक तो होगा ही साथ में उसका डॉक्टर के साथ एक भावनात्मक रिश्ता भी जुड़ेगा।
- मुझे इस बात की निहायत खुशी है कि यहाँ दिव्यांग भाई-बहनों को केवल अच्छा इलाज देने की ही व्यवस्था नहीं है बल्कि

यहाँ उनके पुर्नवास और पुनस्थापन की चिंता भी बराबर की जाती है । यह institute पेरप्लेझिक मरीज़ों की चिकित्सा और पुर्नवसन का विशिष्ट संस्थान बना है और इसके विकास में डॉ. एम. एम. प्रभाकर और उनके सहयोगियों का बहुत योगदान रहा है । मैं इनको मेरी तरफ से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ । इस institute के डॉक्टरों के साथ-साथ राज्य सरकार के स्वास्थ्य विभाग का भी मैं अभिनंदन करता हूँ जो इस मानवीय कार्यो में बड़ी लगन के साथ लगा हुआ है । इस सरकारी हॉस्पिटल में आधुनिक equipments तथा कई प्रकार की तकनीके उपलब्ध हैं । साथ-साथ उनके पुर्नवसन का काम भी किया जाता है । इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और स्वयं के पैरों पर खड़े रहने में मदद मिल जाती है । दिव्यांगजनों को पुर्नवसन के माध्यम से मुख्य धारा में लाने का काम बहुत ही चुनौतीभरा है । मगर ये बहुत बड़ा मानवतावादी कार्य है । इस चुनौती को इस institute ने बहुत सफलता से निभाया है।

- समाज में दिव्यंगजनों के ऐसे कई उदाहरण मिलते है जिन्होंने अपनी शारीरिक असमर्थता पर विजय प्राप्त कर के अपनी

असाधारण योग्यता और प्रतिभा का परिचय दिखाया है। अंग्रेजी साहित्य के महान कवि Milton युवा आयु में ही नेत्रहीन हो गये थे। अमेरिका के 32 वें president Franklin D. Roosevelt पोलियो से ग्रस्त हो गये थे । Louis Braille ने ब्रेल लिपि का आविष्कार करके दिव्यांगजनों की बहुत बड़ी सेवा की थी । हिन्दी के प्रसिद्ध कवि सूरदास नेत्रहीन होने के बावजूद भी कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करने में बहुत ही माहीर थे। इन सभी उदाहरणों से हमें पता चलता है कि दिव्यांगजनों में भी एक क्षमता और प्रतिभा होती है जिसको प्रोत्साहन मिलना जरूरी है। दिव्यांगजनों में आत्मविश्वास और आशा का संचार करना यह धर्म है और परमार्थ है। हमारे यहाँ धर्म की परिभाषा करते हुये यह कहा गया है कि परहित सरिस धरम नहीं भाई, जिसका अर्थ है परहित करने जैसा कोई धर्म नहीं है।

- हमारे समाज के दिव्यांगजनों को तथा विकलांग भाई-बहनों को के लिए उपयोगी बनकर हम समाज ऋण से मुक्त हो सकते हैं । गुजरात प्रदेश की परहित करने की एक बहुत ही उज्जवल परंपरा रही है । भक्तकवि नरसिंह मेहता ने

वैष्णव जन के बारे में कहा था कि जो पराई पीड़ा को महसूस करता है वही वैष्णव जन है । यही वैष्णव जन की परंपरा इस institute के सभी डाक्टरों तथा स्टाफ में मौजूद है और उसीसे प्रेरित होकर ये सभी रोगियों में आत्मविश्वास जगाने का काम करते हैं । ऐसे अच्छे कार्यक्रम का आयोजन करने के लिये में डॉ. प्रभाकर तथा उनकी टीम को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। धन्यवाद।